इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

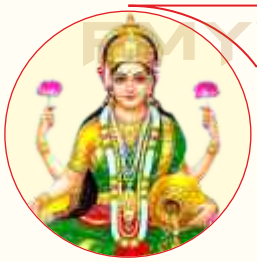

तांत्रोक्त ऋणहर्ता ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी पंचमी - 23 मार्च

जब **जीवन** में **ऋण** आता है तो **दीमक** की तरह जीवन की **प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, स्वास्थ्य** समाप्त हो जाता है साथ ही **जीवन मानसिक तनाव,** लगातार **वित्तीय तनाव** और **असुरक्षा** से भरा होता है। इसमें **कमाई** का बड़ा **हिस्सा ब्याज** और **किश्तों** में चला जाता है। जिसके कारण जीवन **बोझिल** सा हो जाता है। अतः उक्त **दोष के निवारण** हेतु **साधक** को **"तांत्रोक्त ऋणहर्ता ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना"** अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये।

नील तारा साधना

महातारा जयंती - 26 मार्च

महर्षि पतंजली के अनुसार-**अविद्या, द्वेष, अस्मिता, राग** तथा **अभिनिवेश**- इन प्रकार के **क्लेशों** से **भगवती तारा** अपने **साधकों** की **रक्षा** करती हैं। **भगवती नील तारा** अपने **साधकों** को **कठिन दुःख** से **रक्षा** करते हुये **भवसागर** से पार उतारने वाली है और उनके **भौतिक जीवन** में व्याप्त **उग्र,** आपत्ति रुपी **भव-बन्धन** से मुक्त करते हुये **ज्ञान, विद्या, बुद्धि** प्रदान करती है तथा **आध्यात्मिक जीवन** में **पूर्णता** प्रदान करते हुये **साधक** को **कैवल्य के मार्ग** पर **प्रशस्त** करती है।

जया दुर्गा साधना

रामनवमी - 26 मार्च

भगवती दुर्गा का ही **वरदायक स्वरुप जया** है तथा वे अपने एक अन्य **कल्याणदायक** स्वरूप **जया** के माध्यम से **भक्तों** की **आशा पूर्ण** करने के लिये **तत्पर** रहती हैं। **देवी** और **देवता** स्वयं **आतुर** रहते हैं कि कब उन्हें **उचित आधार** मिले और वे अपने **कल्याणकारी स्वरुप** के माध्यम से जगत का **कल्याण** करें। **साधक** को प्रत्येक रुप से **परिपूर्ण** बना लेना और जीवन की समस्त **दुर्गतियों** का **समापन** कर **अद्वितीयता** के पथ पर कदम बढ़ा देना, जिससे वह **ऋद्धि-सिद्धि** युक्त **सर्व लक्ष्मियों** से युक्त होता है, ये **भगवती दुर्गा** के **साधना** के फलस्वरुप ही संभव है। **भगवान श्रीराम** ने स्वयं **शक्ति स्वरुपा भगवती दुर्गा** को प्रसन्न किया था।

रस-सौन्दर्य युक्त मांत्रोक्त मातंगी साधना

मातंगी जयन्ती - 20 अप्रैल

जीवन में **आध्यात्मिक, भौतिक** सभी पक्ष **महत्वपूर्ण** है। यह भी **अकाट्य सत्य** है कि **भौतिक जीवन** की **पूर्णता** से ही **आध्यात्मिक जीवन** के **ज्ञान-चेतना** का विस्तार होता है। **मातंगी महाविद्या गृहस्थ जीवन** में **रस, भोग-विलास, आनन्द, धन, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, व्यापार** आदि सभी क्षेत्रों में **सफलता** प्राप्त कर पूर्ण **समृद्धिवान** बनाने में **सक्षम** व तुरंत प्रभाव डालने वाली है। यदि **पति-पत्नी** के **सम्बन्धों** में **मधुरता** न रह गई हो तो इस **साधना** के माध्यम से सम्बन्ध **मधुर** हो जाते हैं। वस्तुतः यह **साधना रस** और **सौन्दर्य की साधना** है जिससे **साधक** के अंदर **अद्वितीय सम्मोहन** पैदा हो जाता है जिसके कारण उसे प्रत्येक क्षेत्र में **सफलता** मिलती ही है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।